

सूर्य चालोसा

दोहा

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग।
पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के सङ्ग॥

चौपाई 1

जय सविता जय जयति दिवाकर।
सहस्रांशु सप्ताश्व तिमिरहर॥

चौपाई 2

भानु पतंग मरीची भास्कर।
सविता हंस सुनूर विभाकर॥

चौपाई 3

विवस्वान आदित्य विकर्तन।
मार्तण्ड हरिरूप विरोचन॥

चौपाई 4

अम्बरमणि खग रवि कहलाते।
वेद हिरण्यगर्भ कह गाते॥

चौपाई 5

सहस्रांशु प्रद्योतन कहि कहि।
मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि॥

चौपाई 6

अरुण सदृश सारथी मनोहर।
हाँकत हय साता चढ़ि रथ पर॥

चौपाई 7

मंडल की महिमा अति न्यारी।
तेज रूप केरी बलिहारी॥

चौपाई 8

उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते।
देखि पुरंदर लज्जित होते॥

चौपाई 9

मित्र मरीचि भानु अरुण भास्कर।
सविता सूर्य अर्क खग कलिकर॥

चौपाई 10

पूषा रवि आदित्य नाम लै।
हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै॥

चौपाई 11

द्वादस नाम प्रेम सों गावैं।
मस्तक बारह बार नवावैं॥

चौपाई 12

चार पदारथ सो जन पावै।
दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावै॥

चौपाई 13

नमस्कार को चमत्कार यह।
विधि हरिहर को कृपासार यह॥

चौपाई 14

सेवै भानु तुमहिं मन लाई।
अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई॥

चौपाई 15

बारह नाम उच्चारन करते।
सहस जनम के पातक टरते॥

चौपाई 16

उपाख्यान जो करते तवजन।
रिपु सों जमलहते सोतेहि छन॥

चौपाई 17

धन सुत जुत परिवार बढ़तु है।
प्रबल मोह को फंद कटतु है॥

चौपाई 18

अर्क शीश को रक्षा करते।
रवि ललाट पर नित्य बिहरते॥

चौपाई 19

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत।
कर्ण देस पर दिनकर छाजत॥

चौपाई 20

भानु नासिका वास करहु नित।
भास्कर करत सदा मुख को हित॥

चौपाई 21

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे।
रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे॥

चौपाई 22

कंठ सुवर्ण रेत की शोभा।
तिग्म तेजसः कांधे लोभा॥

चौपाई 23

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर।
त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर॥

चौपाई 24

युगल हाथ पर रक्षा कारन।
भानुमान उरसर्म सुउदरचन॥

चौपाई 25

बसत नाभि आदित्य मनोहर।
कटि मंह हंस रहत मन मुदभर॥

चौपाई 26

जंघा गोपति सविता बासा।
गुप्त दिवाकर करत हुलासा॥

चौपाई 27

विवस्वान पद की रखवारी।
बाहर बसते नित तम हारी॥

चौपाई 28

सहस्रांशु सर्वांग सम्हारै।
रक्षा कवच विचित्र विचारे॥

चौपाई 29

अस जोजन अपने मन माहीं।
भय जग बीच करहुं तेहि नाहीं॥

चौपाई 30

दरिद्र कुष्ठ तेहि कबहुं न व्यापै।
जोजन याको मन मंह जापै॥

चौपाई 31

अंधकार जग का जो हरता।
नव प्रकाश से आनन्द भरता॥

चौपाई 32

ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही।
कोटि बार मैं प्रनवौं ताही॥

चौपाई 33

मंद सदृश सुत जग में जाके।
धर्मराज सम अद्भुत बाँके॥

चौपाई 34

धन्य धन्य तुम दिनमनि देवा।
किया करत सुरमुनि नर सेवा॥

चौपाई 35

भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों।
दूर हटत सो भव के भ्रम सों॥

चौपाई 36

परम धन्य सो नर तनधारी।
हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी॥

चौपाई 37

अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन।
मधु वेदांग नाम रवि उदयन॥

चौपाई 38

भानु उदय बैसाख गिनावै।
ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै॥

चौपाई 39

यम भादों आश्विन हिमरेता।
कातिक होत दिवाकर नेता॥

चौपाई 40

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं।
पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं॥

समापन दोहा

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य।
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध, होहिं सदा कृतकृत्य॥